शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'पञ्चगतिदीपनी' : एक पालि काव्य-ग्रन्थ

डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य
सहायक प्रोफेसर
स्कूल ऑफ़ बुद्धिस्ट स्टडीज एण्ड सिविलाईजेशन
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश (भारत)

शोध संक्षेप

'पञ्चगतिदीपनी' नामक ग्रन्थ को पालि काव्य-साहित्य की एक अमूल्य धरोहर के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसमें पाँच गतियों अर्थात् निरय-योनि, तिरश्चीन-योनि, प्रेत-योनि, मनुष्य-योनि एवं देव-योनि की व्याख्या काव्यात्मक शैली में की गयी है, जो बुद्धोपदिष्ट कर्मवाद एवं कर्मफल पर आधारित है। यह ग्रन्थ एक सौ चौदह पालि गाथापदों से परिपूर्ण एक लघु पालि काव्य-ग्रन्थ है जिसे शतक-काव्य की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। कवि ने पाँच गतियों को बुद्धोपदिष्ट कर्मवाद के सिद्धान्त के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। ग्रन्थ की भाषा-शैली में अलंकारिकता, रसात्मकता तथा गेयात्मकता विद्यमान है। कवि ने ग्रन्थ की विषयवस्तु के अनुसार ही अनुकूलित भाषा-शैली का प्रयोग किया है। पञ्चगतिदीपनी शब्द और अर्थयुक्त रचना है। रसात्मकता, अलंकारिकता, से युक्त और पददोष एवं वाक्यदोष से मुक्त रचना है। इसमें छन्द-योजना है। मधुर शब्दों से युक्त रचना है; जो शब्द-तत्व, अर्थ-तत्व, भाव-तत्व, कल्पना-तत्व एवं बुद्धि-तत्व से आपूरित है। गेयात्मकता इसकी विशेषता है । प्रसन्नता एवं आनन्द से युक्त रचना है। पापकर्म से विरत रहकर निरन्तर कुशल कर्म की शिक्षा देने वाली पञ्चगतिदीपनी सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक दृष्टि से एक अति विशिष्ट काव्य-रचना है। अतः काव्यात्मकता से परिपूर्ण पञ्चगतिदीपनी को पालि काव्य-साहित्य की एक श्रेष्ठ व उपयोगी निधि कहा जा सकता है।

मुख्य शब्द :
पालि काव्य-साहित्य, पञ्चगतिदीपनी, पाँच गतियों का प्रदीपन , शाक्यमुनि गौतम बुद्ध , प्रथम-उदान, निरय-कण्ड, तिरच्छान-कण्ड, पेत-कण्ड, मनुस्स-कण्ड, देव-कण्ड, निरय-योनि, तिरश्चीन-योनि, प्रेत-योनि, मनुष्य-योनि, देव-योनि, आठ महानरक, संजीव, कालसूत्र, संघात, रोरुव, महारोरुव, ताप, महाताप, अवीचि, चार द्वितीयक नरक, मलकुण्ड, कुक्कुल, असिपत्तवन, नदी, बीभत्स-रस, करुण-रस, शान्त-रस, वीर-रस, अनुप्रास अलंकार, उपमा अलंकार, बुद्धोपदिष्ट कर्मवाद सिद्धान्त एवं पालि काव्य-ग्रन्थ।

प्रस्तावना

शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के श्रीमुख से प्रस्रवित प्रथम-उदान से ही काव्य का आविर्भाव होता है। बुद्धवचन में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा भाषित व अनुमोदित वचनों में विद्यमान काव्यात्मकता के तत्वों को देखा जा सकता है, जिसकी परिणति कालान्तर में पालि काव्य-साहित्य के रूप में हुई। अर्थात् ऐसा कहा जा सकता है कि पालि तिपिटक-साहित्य से ही पालि काव्य-साहित्य का विकास हुआ है। शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के श्रीमुख से निकलने वाले प्रथम-उदान के महत्व को अभिव्यक्त करते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि शाक्यमुनि गौतम बुद्ध द्वारा प्रस्रवित प्रथम-उदान ही पालि-साहित्य में काव्य के उद्भव का मूल हेतु

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है, जिसके विकास के विपाकस्वरूप ही पालि काव्य-साहित्य का आविर्भाव सम्भव हो सका। 1 पालि तिपिटक-साहित्य की विषयवस्तु को ही मूलाधार बनाकर पालि भाषा अर्थात् मागधी-भाषा में अलंकारिक भाषा-शैली, रस एवं छन्द आदि का प्रयोग करके अनेक महत्वपूर्ण व जीवनोपयोगी पालि काव्य-ग्रन्थों की रचना की गयी है। अतः पालि काव्य-साहित्य को काफी समृद्धशाली एवं विस्तृत कहा जा सकता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पालि काव्य-साहित्य के अन्तर्गत लगभग बयालीस पालि ग्रन्थ आते हैं। पालि काव्य-साहित्य के विकास में मुख्य रूप से श्रीलंका , बरमा, भारतवर्ष एवं थाईलैण्ड जैसे बौद्ध देशों का विशेष योगदान रहा है। पालि काव्य-ग्रन्थों की रचना की शुरूआत लगभग पाँचवी सदीं से मानी जा सकती है, जो आधुनिक काल में भी जारी है। पालि काव्य-साहित्य के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान श्रीलंका देश ने किया है , उसके बाद बरमा एवं भारतवर्ष का स्थान आता है। पालि काव्य-साहित्य के समस्त ग्रन्थ धार्मिक , दार्शनिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं ग्रन्थों में से पञ्चगतिदीपनी (पञ्चगतिदीपनी 2) नामक ग्रन्थ भी पालि काव्य-साहित्य की एक अमूल्य निधि है।

पञ्चगतिदीपनी का अर्थ

पञ्चगतिदीपनी शब्द तीन शब्दों - पञ्च, गति एवं दीपनी से मिलकर बना है। यहाँ पर पञ्च शब्द का अभिप्राय पाँच 3 से है , गति शब्द का अभिप्राय गति, गमन4, भवभेद5, जाना6 है, तथा दीपनी शब्द का अभिप्राय प्रदीपन , व्याख्यात्मक टिप्पणी7, व्याख्या, विवेचन, विवरण, विश्लेषण, उजाला एवं प्रकाश से है। एक ऐसा ग्रन्थ जिसमें पाँच गतियों की व्याख्यात्मक टिप्पणी प्रदान की गयी हो अर्थात् एक ऐसी रचना जिसमें निरय-योनि, तिरश्चीन-योनि अर्थात् पशु-योनि , प्रेत-योनि, मनुष्य-योनि एवं देव-योनि को पद्यात्मक शैली में व्याख्यात्मक टिप्पणी के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया हो , उसे पञ्चगतिदीपनी कहा जा सकता है। पञ्चगतिदीपनी शब्द के अभिप्राय को पाँच गतियों का प्रदीपन के रूप में समझा जा सकता है। इसीलिए पञ्चगतिदीपनी नामक ग्रन्थ को पाँच गतियों का प्रदीपन के नाम से भी सम्बोधित किया जा सकता है। पालि काव्य-साहित्य के पञ्चगतिदीपनी के रचनाकार एवं रचनाकाल के सम्बन्ध में आज भी किसी प्रकार की कोई प्रमाणिक जानकारी प्राप्त नहीं पायी है। फिर भी थेरवादी बौद्ध देशों में पालि काव्य-साहित्य के सृजन की परम्परा को ध्यान में रखते हुए पञ्चगतिदीपनी अर्थात् पञ्चगतिदीपनी को चौदहवीं शताब्दी में विरचित काव्य-कृति माना जा सकता है।8

बुद्धोपदिष्ट कर्मवाद के आलोक में पञ्चगतिदीपनी में काव्यात्मक शैली के द्वारा पाँच गतियों अर्थात् निरय-योनि , तिरश्चीन-योनि, प्रेत-योनि, मनुष्य-योनि एवं देव-योनि की व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। यह ग्रन्थ एक सौ चौदह पालि गाथापदों से परिपूर्ण एक लघु पालि काव्य-ग्रन्थ है, जिसे शतक-काव्य की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। कवि ने ग्रन्थ की विषयवस्तु को विभाजित करने के लिए कण्ड शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अभिप्राय परिच्छेद 9 होता है। इसकी सम्पूर्ण विषयवस्तु को निरय-कण्ड , तिरच्छान-कण्ड, पेत-कण्ड, मनुस्स-कण्ड एवं देव-कण्ड में विभक्त किया गया है। इन पाँच कण्डों से पूर्व कवि ने ग्रन्थ की शुरूआत में नमत्थु नामक बिन्दु के माध्यम से शाक्यमुनि गौतम बुद्ध की स्तुति एवं उनके कर्मवाद के सिद्धान्त को

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चार गाथापदों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। कवि ने निरय-कण्ड में वर्णित चालीस पालि गाथापदों के माध्यम से संजीव, कालसूत्र, संघात, रोरुव, महारोरुव, ताप, महाताप एवं अवीचि नामक आठ महानरकों एवं प्रत्येक नरक के लिए चार द्वितीयक नरक मलकुण्ड , कुक्कुल, असिपत्तवन एवं नदी का उल्लेख किया है। कवि ने तिरच्छान-कण्ड में वर्णित सात पालि गाथापदों के माध्यम से पापकर्मों के कारण मिलने वाली पशु-योनियों का वर्णन किया है। कवि ने पेत-कण्ड में वर्णित अठारह पालि गाथापदों के माध्यम से कुम्भण्ड एवं असुर के रूप में प्रेतों का वर्णन किया है। कवि ने मनुस्स-कण्ड में वर्णित तैंतीस पालि गाथापदों के माध्यम से मनुष्य-योनि का वर्णन किया है। ग्रन्थ के अन्त में कवि ने देव-कण्ड में वर्णित बारह पालि गाथापदों के माध्यम से देव-योनि का वर्णन किया है। ग्रन्थ की समाप्ति पर कवि ने प ंचगतिदीपनी निट्ठिता शब्दों का उल्लेख किया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि देव-योनि के वर्णन के साथ ही पञ्चगतिदीपनी समाप्त हो जाता है।

'पञ्चगतिदीपनी' की भाषा-शैली में अलंकारिकता , रसात्मकता तथा गेयात्मकता विद्यमान है। कवि ने ग्रन्थ की विषयवस्तु के अनुसार ही अनुकूलित भाषा-शैली का प्रयोग किया है। इसमें बीभत्स-रस, करुण-रस, शान्त-रस एवं वीर-रस आदि का प्रयोग किया गया है। इसमें अनुप्रास एवं उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है। अलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग के कारण ग्रन्थ की गाथाओं की रोचकता एवं आकर्षकता में वृद्धि हो गयी है। इसमें गेयात्मकता से परिपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है।

पञ्चगतिदीपनी को पालि काव्य-साहित्य की एक विशिष्ट काव्य-कृति कहा जा सकता है। इसी सन्दर्भ में यहाँ पर यह भी चर्चा कर लेना भी समीचीन एवं तर्कसंगत होगा कि वे कौन-कौन से काव्य के लक्षण हैं - जो पञ्चगतिदीपनी में परिलक्षित होते हैं तथा इसे एक पालि काव्य-ग्रन्थ के रूप में स्थान दिलाने में सहायक हैं। अर्थात् पञ्च गतिदीपनी में विद्यमान काव्य-लक्षणों चर्चा कर लेनी चाहिए , ताकि इस ग्रन्थ को एक पालि काव्य-ग्रन्थ के रूप में सिद्ध किया जा सके। पञ्चगतिदीपनी में विद्यमान काव्यत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है -

पञ्चगतिदीपनी का काव्यत्व

पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जिसमें अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। यह सर्वविदित सत्य है कि शब्द और अर्थ से परिपूर्ण रचना काव्य होती है। शब्द और अर्थयुक्त समन्वित रचना 'काव्य' होती है। शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। 10 अर्थात् शब्द और अर्थ का सहित-भाव 'काव्य' कहलाता है।11 शब्द और अर्थ से परिपूर्ण कृति को 'काव्य' के रूप में परिभाषित करते हुए आचार्य मम्मट कहते हैं कि तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि। अर्थात् दोषों से रहित , गुण-युक्त और (साधारणतः अलंकार सहित परन्तु) कहीं-कहीं अलंकार-रहित शब्द और अर्थ (दोनों की समिष्ट) काव्य (कहलाती) है। 12 अतः काव्य के इस लक्षण को ध्यान में रखते हुए इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है, जो शब्द और अर्थ से युक्त एक काव्य-कृति है , जिसके कारण

इसे पालि काव्य-साहित्य की एक उत्कृष्ट काव्य-रचना कहा जा सकता है।

पञ्चगतिदीपनी ग्रन्थ एक ऐसी रचना है , जिसमें रसात्मकता से परिपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें रसात्मकता सर्वत्र विद्यमान है। इसमें वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने हेतु रसात्मक भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को बहुत ही आकर्षक , सार्थक, गुणयुक्त एवं दोषरहित शब्दों के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। इसमें कवि ने निरय-योनि , तिरश्चीन-योनि, प्रेत-योनि, मनुष्य-योनि एवं देव-योनि की व्याख्या को एक सौ चौदह गाथापदों के माध्यम से सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया है। इसमें वर्णित विषयवस्तु का अध्ययन करने से विदित होता है कि पञ्चगतिदीपनी में मूल रूप से बीभत्स-रस, करुण-रस, शान्त-रस एवं वीर-रस आदि का प्रयोग किया गया है।

रसात्मकता से परिपूर्ण रचना 'काव्य' होती है। 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्। '13 अर्थात् ऐसा वाक्य जिसकी आत्मा रस है - काव्य कहलाता है। 14 अथवा काव्य वह है - जो रसात्मक हो। 15 अतः काव्य के इस लक्षण के आधार पर इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जो बीभत्स-रस, करुण-रस, शान्त-रस एवं वीर-रस आदि से परिपूर्ण होने के कारण एक काव्य-कृति है , जिसके कारण इसे पालि काव्य-साहित्य की एक उत्कृष्ट काव्य-रचना कहा जा सकता है।

पञ्चगतिदीपनी में वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने हेतु अलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें अनुप्रास एवं उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है। अलंकारिक भाषा-शैली का प्रयोग के कारण ग्रन्थ की विषयवस्तु में रोचकता एवं आकर्षकता में वृद्धि हो गयी है। गुणों एवं अलंकारों से परिपूर्ण रचना काव्य होती है। अलंकारयुक्त रचना को काव्य कहा जाता है। यह सर्वविदित सत्य है कि काव्य शब्दोऽयं गुणालंकार-संस्कृतयोः शब्दार्थ-योर्वर्वते। 16 गुणों एवं अलंकारों से संस्कारित की गयी उत्कृष्ट रचना ही काव्य कही जाती है। यह सर्वविदित सत्य है कि गुणवदलघ्कृतच वाक्यमेव काव्यम्।17 अर्थात् अलंकारों एवं गुणों से युक्त वाक्य ही काव्य है। 18 काव्य की श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता में अलंकारों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। अलंकार-योजना के द्वारा किसी भी रचना में काव्यात्मकता का संचार होता है। अलंकार-योजना से परिपूर्ण कृति काव्य होती है। यह सर्वविदित सत्य है कि -

अनवज्जं मुखम्भोजं अनवज्जा च भारती।
अलंकता व सोभन्ते किन्नु ते निरलंकता।।19

अर्थात् पूर्णतः दोषों से रहित मुख कमल एवं भारती (कविता) की शोभा अलंकारों से ही होती है, अलंकारों के बिना उनमें शोभा कैसी ? 20 इस तथ्य की प्रमाणिकता पञ्चगतिदीपनी की सम्पूर्ण विषयवस्तु के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। अतः काव्य के इस लक्षण के आधार पर इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है, जो अनुप्रास एवं उपमा आदि अलंकारों से परिपूर्ण होने के कारण एक काव्य-कृति है, जिसके कारण इसे पालि काव्य-साहित्य की एक उत्कृष्ट काव्य-रचना कहा जा सकता है।

पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जिसमें पददोष एवं वाक्यदोष से मुक्त अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को बहुत ही आकर्षक , सार्थक, गुणयुक्त एवं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दोषरहित शब्दों के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। पञ्चगतिदीपनी का अध्ययन करने से विदित होता है कि यह ग्रन्थ विरुद्धार्थान्तर-दोष , अध्यर्थ-दोष, क्लिष्ट-दोष, विरोधी-दोष, नेय्य-दोष, विशेषणापेक्ष-दोष, हीनार्थक-दोष, अनर्थक-दोष, एकार्थ-दोष, भग्नरीतिक-दोष, अव्याकीर्ण-दोष, ग्राम्य-दोष, यतिहीन-दोष, क्रमच्युत-दोष, अत्युक्त-दोष, अपेतार्थ-दोष एवं सम्बन्धफरुस-दोष (बन्धफरुस-दोष) से मुक्त एक उत्कृष्ट रचना है। पददोष एवं वाक्यदोष से मुक्त रचना काव्य होती है। यह सर्वविदित सत्य है कि बन्धो च नाम सद्दत्थासहिता दोसवज्जिता। 21 अर्थात् दोषरहित शब्द और अर्थ के साहित्य को बन्ध (काव्य) कहते हैं। 22 इस तथ्य की प्रमाणिकता पञ्चगतिदीपनी की सम्पूर्ण विषयवस्तु के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। अतः काव्य के इस लक्षण के आधार पर इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जो काव्यदोषों से मुक्त एक काव्य-कृति है , जिसके कारण इसे पालि काव्य-साहित्य की एक उत्कृष्ट काव्य-रचना कहा जा सकता है।

पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है, जिसमें छन्द-योजना का प्रयोग किया गया है। इसमें काव्योचित आकर्षण एवं गुणों को समाविष्ट करने हेतु छन्द-योजना का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। छन्द-योजना के प्रयोग के कारण इसमें गेयात्मकता का आविर्भाव सम्भव हो सका है। छन्दबद्ध एवं पद्यमयी रचना को काव्य कहा जाता है। यह सर्वविदित सत्य है कि Poetry is metrical composition.23 अर्थात् कविता छन्दोमयी रचना है। 24 छन्दोबद्ध रचना काव्य होती है। यह सर्वविदित सत्य है कि Poetry is an imitation of nature of pathetic and numerous speech.25 अर्थात् काव्य रागात्मक और छन्दोबद्ध भाषा के माध्यम से प्रकृति का अनुकरण है। 26 इस तथ्य की प्रमाणिकता पञ्चगतिदीपनी की सम्पूर्ण विषयवस्तु के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है।

पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जिसमें कर्णप्रिय एवं मधुर शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को बहुत आकर्षक , सार्थक, गुणयुक्त एवं दोषरहित मधुर शब्दों के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। मधुर शब्दों से युक्त रचना 'काव्य' कहलाती है। यह सर्वविदित सत्य है कि Poetry is the art of expressing in melodious words, thoughts which are the creations of imagination and feelings 27 अर्थात् कल्पना और अनुभूति से उत्पन्न विचारों को मधुर शब्दों में अभिव्यक्त करने की कला कविता है। 28 लेकिन पञ्चगतिदीपनी में विषयवस्तु के अनुसार कहीं-कहीं पर मधुर शब्दावली के साथ-साथ भयानक व डरावने शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। इस तथ्य की प्रमाणिकता पञ्चगतिदीपनी की सम्पूर्ण विषयवस्तु के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। अतः काव्य के इस लक्षण के आधार पर इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जो कर्णप्रिय एवं मधुर शब्दों से परिपूर्ण भाषा में रचित एक काव्य-कृति है, जिसके कारण इसे पालि काव्य-साहित्य की एक उत्कृष्ट काव्य-रचना कहा जा सकता है।

पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है, जिसमें शब्द-तत्व, अर्थ-तत्व, भाव-तत्व, कल्पना-तत्व एवं बुद्धि-तत्व का प्रयोग किया गया है। शब्द-तत्व , अर्थ-तत्व, भाव-तत्व, कल्पना-तत्व एवं बुद्धि-तत्व की उपस्थिति के कारण इस ग्रन्थ में आकर्षकता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एवं सरसता का आविर्भाव सम्भव हो सका है। पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जिसमें गेयात्मकता से परिपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री को आकर्षक एवं सुगम ढंग से प्रस्तुत करने हेतु गेयात्मकता से ओतप्रोत भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। इस ग्रन्थ के अध्ययन के दौरान पाठकों के चित्त में कहीं-कहीं पर भय भी उत्पन्न होता है। इसमें वर्णित सम्पूर्ण सामग्री को एक सौ चौदह गाथापदों के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। इसमें वर्णित सामग्री में विद्यमान गाथाओं के माध्यम से गेयात्मकता के तत्व की उपस्थिति प्रकट होती है। यह सर्वविदित सत्य है कि गेयात्मकता से परिपूर्ण रचना काव्य होती है। इस तथ्य की प्रमाणिकता पञ्चगतिदीपनी की सम्पूर्ण विषयवस्तु के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। अतः काव्य के इस लक्षण के आधार पर इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में ऐसा कहा जा सकता है कि पञ्चगतिदीपनी एक ऐसी रचना है , जो गेयात्मकता से परिपूर्ण भाषा में रचित एक काव्य-कृति है, जिसके कारण इसे पालि काव्य-साहित्य की एक उत्कृष्ट काव्य-रचना कहा जा सकता है।

प्रसन्नता एवं आनन्द की हर्षोल्लासपूर्ण स्थिति से परिपूर्ण होने के कारण पञ्चगतिदीपनी में वर्णित सामग्री का अध्ययन करने से पाठक एवं श्रोताओं को रसपूर्ण सुखद क्षणों की अनुभूति होती है। प्रसन्नता एवं आनन्द की हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण को प्रादुर्भूत करने वाली रचना काव्य होती है। यह सर्वविदित सत्य है कि गम्भीर , शान्त, समाधियुक्त, सौमनस्ययुक्त एवं ज्ञानावस्था से परिपूर्ण वातावरण में शास्ता आदि आर्य पुद्गलों के मुख से निकले हृदयोद्गार ही काव्य है।29

निष्कर्ष

बुद्धोपदिष्ट कर्मवाद सिद्धान्त के आलोक में पाँच गतियों अर्थात् निरय-योनि, तिरश्चीन-योनि, प्रेत-योनि, मनुष्य-योनि एवं देव-योनि की व्याख्या को बहुत सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से प्रकाशित करने के कारण पञ्चगतिदीपनी को मानव जीवनोपयोगी कृति कहा जा सकता है। एक सौ चौदह पालि गाथापदों से परिपूर्ण पञ्चगतिदीपनी मानव जीवन को सुमार्ग पर लगाने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकती है। पञ्चगतिदीपनी की भाषा-शैली में अलंकारिकता , रसात्मकता तथा गेयात्मकता विद्यमान है। कवि ने ग्रन्थ की विषयवस्तु के अनुसार ही अनुकूलित भाषा-शैली का प्रयोग किया है। पापकर्म से विरत रहकर कुशल कर्म के सम्पादन की शिक्षा देने वाली पञ्चगतिदीपनी धार्मिक , दार्शनिक एवं सामाजिक दृष्टि से एक अति विशिष्ट काव्य-रचना है। अतः काव्यात्मकता से परिपूर्ण पञ्चगतिदीपनी को पालि काव्य-साहित्य की एक श्रेष्ठ व उपयोगी निधि कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 जिनालंकार (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य, अहमदाबादः रिलायबल पब्लिशिंग हाऊस , 2015, पृष्ठ 51

2 Feer Leon, Pañcagatidīpanaṃ, Journal of the Pali Text Society 1884 (Editor) T.W. Rhys Davids, London: Henry Frowde, Oxford University Press Warehouse, Amen Corner, E.C., pp.152-161.

3 पालि-हिन्दी कोश (सम्पादक) भदन्त आनन्द कौसल्यायन, नागपुरः सुगत प्रकाशन कम्पनी, 1997, पृष्ठ 185

4 अभिधानप्पदीपिका एकक्खरकोससहिता (पालिसद्दकोसो) (सम्पादक) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसीः बौद्ध-भारती, 1981, पृष्ठ 35

5 वही

6 पालि-हिन्दी कोश, वही, पृष्ठ 110
7 पालि-हिन्दी कोश, वही, पृष्ठ 150
8 अनागतवंस (मेत्तेय बुद्ध का इतिहास) (सम्पादक एवं अनुवादक) ज्ञानादित्य शाक्य , नागपुरः संज्ञान प्रकाशन, 2016, पृष्ठ 86
9 पालि-हिन्दी कोश, वही, पृष्ठ 86
10 काव्यांलकार (व्याख्याकार) सत्यदेव चौधरी, दिल्लीः वासुदेव प्रकाशन, 1965, पृष्ठ 18
11 सत्यदेव चौधरी, भारतीय काव्यशास्त्रः सुबोध विवेचन, नई दिल्लीः अलंकार प्रकाशन , 2003, पृष्ठ 286
12 काव्य-प्रकाश (अनुवादक एवं सम्पादक) विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, वाराणसीः ज्ञानमण्डल लिमिटेड , 1985, पृष्ठ 19
13 साहित्यदर्पणमः (सम्पादक) योगेश्वरदत्त शर्मा पाराशरः, दिल्लीः नाग पब्लिशर्स, 1999, पृष्ठ 90
14 सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरूप गुप्त , भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, दिल्लीः अशोक प्रकाशन, 1978, पृष्ठ 188
15 साहित्यदर्पणमः, वही, पृष्ठ 23
16 नगेन्द्र, भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1963, पृष्ठ 5
17 काव्यमीमांसा (सम्पादक एवं व्याख्याकार) गंगा-सागर राय, वाराणसीः चौखम्बा विद्याभवन, 1982, पृष्ठ 55
18 उमाशंकर तिवारी , काव्यमीमांसा का शास्त्रीय अध्ययन, दिल्लीः न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, 2002, पृष्ठ 35
19 सुबोधालंकार (अनुवादक) ब्रह्ममित्र अवस्थी , दिल्लीः श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, 1973, पृष्ठ 4
20 वही
21 वही, पृष्ठ 3
22 वही
23 शान्तिस्वरूप गुप्त , पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, दिल्लीः अशोक प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 432
24 सत्यदेव चौधरी, भारतीय काव्यशास्त्रः सुबोध विवेचन, वही, पृष्ठ 293
25 वही
26 वही
27 वही, पृष्ठ 297
28 वही
29 जिनालंकार, वही, पृष्ठ 101